भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 26 अंक : 1 | 15.1.2004 गुरुवार (जनवरी-फरवरी) | वार्षिक चंदा : 50.00

आओ फिर से दिया जलाएं !

३ फरवरी १९५२...

प.पू. पप्पाजी के शब्दों में–

'बृहद् गुणातीत समाज का विजय दिन–

बृहद् गुणातीत समाज की दीवाली– नये वर्ष का दिन !'

यानि–

- आध्यात्मिक इतिहास में एक नया पन्ना जुड़ा–नए युग का प्रारंभ हुआ !
- प्रभु भजने की राह पर अग्रसर मुमुक्षु संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थों के लिए वच. कारियाणी ७ की सिद्धदशा प्राप्त करके दिव्यानंद करने का दिन...
- प्राप्ति की अखंड मस्ती में डूबे रहने का दिन...
- अंतर्दृष्टि करके प्रार्थना करने का दिन...
- संबंध वाली दृष्टि रख कर जीने के लिए संकल्प करने का दिन...
- आध्यात्मिकता में अपनी मंज़िल की ओर एक कदम आगे बढ़ाने का दिन...
- सत्पुरुष के साथ दिव्यभाव व निर्दोषबुद्धि का संबंध दृढ़ कर लेने का दिन...
- मुक्तों के सुख-दुःख में भागीदार बन कर प्रत्यक्ष स्वरूप को व्यापक में निहारने का दिन...
- प्रत्यक्ष स्वरूप की स्मृतियों में मन और बुद्धि को लय और लीन करने का दिन...
- प्रत्यक्ष स्वरूप का ही आधार रख कर साधना को स्पीडी व सरल बनाने का दिन...
- प.पू. काकाजी के अनंत एहसान याद करके उनके प्रति भक्ति अदा करने का दिन...

अनंत आत्माओं की यात्रा को प्रकाशित करने पृथ्वी पर मानो अनिर्देश का अत्यंत तेजस्वी फिर भी अति शीतल सूरज उदित हुआ !

असंख्य बंधनों के मायाजाल में लिपटी–अंधेरों में भटकती बुद्धि को प्रगट स्वरूप व उनके संबंध वाले भक्तों की पराभक्ति के ज्ञान के रूप में प्रगट उपासना की एक नई दिशा मिली... दिव्यता का अनोखा प्रकाश मिला।

गुरुहरि योगीजी महाराज की आज्ञा से सत्संगीबंधु श्री गुलज़ारीलाल नंदाजी के लिए प.पू. काकाजी अपना खूब तेज़ चलता व्यवसाय छोड़ कर साबरकांठा में चुनाव लड़ने गए... गुरुकृपा और आशीर्वाद से चुनाव में तो विजयी बने ही, साथ ही उनकी इस पराभक्ति ने उन्हें अक्षरधाम के गढ़ के विजेता भी बनाया !

वाकई, **अक्षरधाम से अनूठी कल्याण योजना लेकर पधारे गुणातीत पुरुष किसी लौकिक प्रसंग को निमित्त बना कर, खुद गरजू बन कर सेवकों को निहाल कर देते हैं। यह होती है अपने पसंदीदा पात्र पर गुरु की अनुपम करुणा !**

72 घंटे की इस ज्ञानसमाधि में प.पू. काकाजी को अक्षरधाम के तख़्त पर बिराजमान पूर्ण पुरुषोत्तमनारायण श्री सहजानंदस्वामी व पृथ्वी पर मानव स्वरूप में विचरते गुरुहरि योगीजी महाराज के ऐक्य की अपरोक्ष अनुभूति हुई–दर्शन हुआ... गुरुहरि योगीजी महाराज के दिव्य स्वरूप की भव्य प्रतीति होते ही उसी पल से मानो वे स्वयं तत्स्वरूप हो गए !

साक्षात्कार के इस मंगलकारी दिन को 52 साल पूरे हो रहे हैं... साक्षात्कार के समय प.पू. काकाजी की

उम्र केवल 32-33 वर्ष की थी। कैसी होगी इस युवक की खेलदिली ? कैसी होगी गुरु के वचन में दृढ़ विश्वास रख कर एकमात्र उनको ही राजी कर लेने की तीव्र अभीप्सा-तमन्ना– जिसे देख कर गुरु के अंतर की प्रसन्नता **'साक्षात्कार'** के रूप में ढली !

❋ भगवान स्वामिनारायण के प्रगट स्वरूप का उद्घोष करने,
❋ गुणातीत समाज की स्थापना करने,
❋ बहनों के लिए भगवान भजने की राह खुली करने–

गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी का बलवान कंधा चुना। कैसा होगा वह नूर ?

बापा के स्वरूप की यथार्थ पहचान होते ही **'योगी भगवान है, योगी भगवान है–धरती पर जो स्वरूप है वही अक्षरधाम में है; उनका दृढ़ आसरा कर लो, उनमें निर्दोषभाव कर लो - सुखी हो जाओगे'**– इस सत्य का प.पू. काकाजी ने सत्संग में उद्घोष किया। उनकी सचोट परावाणी से मुमुक्षुओं के चैतन्य जागृत होने लगे... और **इस दिन से ही मानो प्रत्यक्ष की निष्ठा से जीता एक गुणातीत समाज अस्तित्व में आया ! सत्संग का पुराना ढाँचा टूटा और अध्यात्म का एक नया पन्ना खुला !**

जगत और सत्संग के अनेक ज्वार-भाटों में, अपमानों में स्वरूपनिष्ठा के सर्वोपरि बल से प.पू. काकाजी अड़िग और स्थितप्रज्ञ रहे। अक्षरधाम की मस्ती उनके जीवन की आख़िरी पल तक रही... स्वरूप को सही अर्थ में 'स्वरूप' माना इसे कहा जाए।

जीवनपर्यंत वे गुणातीत समाज की ढाल बन कर रहे। हर एक प्रकार से अनेक आघात उन्होंने झेले, पर हमारी रक्षा करते रहे। संबंध में आए हर एक को व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक समस्या का हल देकर प्रभुवासित बना देना यह था प.पू. काकाजी का हुन्नर...

प.पू. काकाजी ने हमारे चैतन्य के विकास के लिए एकपक्षीय श्रम किया। वे 'लेना' बैंक नहीं, बल्कि 'देना' बैंक थे... हमारे दोष अपने माथे पर लिए, पर हमें हल्के फूल रखे।

प.भ. गुलज़ारीलाल नंदाजी का चुनाव,
एग्री ओरियंट का केस,
इक्यावन युवकों को साधु की दीक्षा देने पर हुआ विरोध,
बहनों को भगवान भजने की नई क्रांति में मिली
गालियाँ एवं भयंकर अपमान,
1966 के विमुख प्रकरण की आंधी
और फिर–

अपनों द्वारा ही करी गई उपेक्षा !

ऐसी अनेक भयंकर विपरीत परिस्थितियों में सदैव हंसता मुख रह कर सहज आत्मीयता, सम्यक् निर्दोषबुद्धि-दिव्यभाव एवं प्रभु के संबंध की मस्ती का जिसने दर्शन कराया– वे थे हमारे प.पू. काकाजी !

ऐसे भव्य स्वरूप के कार्य को निहारने अंतर की आँखें चाहिए, तो समझने माया से परे की दिव्यबुद्धि चाहिए।

हम सभी जानते हैं कि **हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री अटलविहारी वाजपेयीजी** बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व के साथ-साथ एक प्रेमी, सशक्त, संवेदनशील कवि हृदय के भी मालिक हैं। उनके द्वारा रचित *'अनुभूति के स्वर'* की **निम्न पंक्तियाँ प.पू. काकाजी के जीवन का मर्म उजागर कर देती हैं–**

मनुष्य की पहचान
उसके धन या सिंहासन से नहीं होती,
उसके मन से होती है।
मन की फ़कीरी पर–
कुबेर की संपदा भी रोती है।

प.पू. काकाजी उन प्रभुधारक दिव्य विभूतियों में से एक थे, जो धरती पर खड़े होकर ही आकाश को छूना उत्तम मानते थे। सो ही **गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज व गुरुहरि योगीजी महाराज की शुद्ध गुरुपरंपरा को तनिक भी आँच आने दिए बिना - गौण करे बिना उन्होंने श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज का ध्वज दिगंत में फहराया।** उन्हें कोई भी सत्ता– धनसत्ता, राजसत्ता, मनसत्ता कैसे भी संजोगों में पराजित नहीं कर पाई। अनुयायी बढ़ाने की महत्त्वाकांक्षा उन्हें स्पर्श ही नहीं कर पाई। इसलिए ही वे सोना, चाँदी, प्लेटीनम, हीरे के बजाय भक्तों के दिलों की भावना से तोले गए और **रिद्धि-सिद्धि, वैभव, बाहरी चमक-दमक, कुंभ के मेले, शोभायात्राएं, रेलियाँ, झाँकियाँ, बड़ी-बड़ी गाड़ियों की रौनक-शौनक उनके विशाल व अगाध व्यक्तित्व के सामने आज भी फीकी लगती है।**

प.पू. काकाजी जैसी प्रभुधारक विभूति की गरिमा को एक अन्य पहलु से विचारें कि– अंतर्धान होने के सत्रह साल के बाद भी वे आज अपने आश्रितों के चैतन्य की हर पल कैसी परवरिश कर रहे हैं-रक्षा कर रहे हैं ? कहीं भी-किसी में भी प्रगट होकर- हमें झंझोर कर जागृत करने वे कैसे तत्पर हैं ? यह महसूस करने और दर्शन करने सच में एक अंतर्मुखी दिल और कोई निराली दृष्टि चाहिए।

प.पू. काकाजी ने हम सब पर अनहद् कृपा करके ऐसे प.पू. गुरुजी की भेंट दी है। प.पू. गुरुजी कोई पुस्तक या लेख पढ़ेंगे व सुनेंगे, तो वे ढूँढ लेते हैं कि प.पू. काकाजी ही हमें इस रूप में जागृत कर रहे हैं। अभी-अभी प.पू. स्वामी

रामदासजी के आनंदाश्रम से प्रकाशित *'धी विज़न'* मासिक में पू. स्वामी विवेकानंदजी के लेख का निम्न अंश जो कि खूब मननीय है, उसे पढ़ते ही प.पू. गुरुजी ने यही माना कि इसके द्वारा प.पू. काकाजी हमें आज फिर सावधान कर रहे हैं।

*''जब हमारे गुरु ने शरीर छोड़ा, हम मुट्ठीभर निर्धन एवं अनजान युवक थे। हमारे सामने ऐसी अनेक शक्तिशाली संस्थाएं थीं, जो हमें प्रारंभ में ही मसल देना चाहती थीं। पर रामकृष्ण ने हमें एक बहुत बड़ी भेंट दी थी - 'अभीप्सा' और 'आजीवन संघर्ष करना'–**सिर्फ बोलने में नहीं, बल्कि जीवन जीने के लिए।** और... आज सारा भारत हमारे गुरु को मानता है-पूजता है एवं जिन तथ्यों की उन्होंने शिक्षा दी, वो आज दावाग्नि के रूप में फैल रही है।*

ना तो भीड़ की–संख्या की, ना सामर्थ्य की, ना समृद्धि की, ना विद्वत्ता की, ना किसी व्याख्यान कला की और ना ऐसी किसी और चीज़ की विजय होगी। विजय होगी-पवित्रता की ! यदि एक वाक्य में कहे तो अनुभूति की - ब्रह्म के साक्षात्कार की। हर देश में ऐसे एक दर्जन शेर दिल व्यक्ति होने दो। वो शेर–

जिन्होंने अपने सारे बंधन तोड़ दिये हों,
जिन्होंने अनंत को छू लिया हो,
जिनकी आत्मा ब्रह्मस्वरूप हो चुकी हो,
जो ना तो वैभव की परवाह करते हों,
ना ही सत्ता की और ना यश की !
वे पूरी दुनिया को हिलाने के लिए काफी होंगे...

हम अनुभूति को पकड़े रखें–ब्रह्म रूप होकर ब्रह्मस्वरूप बनने तक। अन्य कोई क्या कहता है उस पर तनिक भी ध्यान न दें।

आजीवन प्रयास के बाद एक आत्मा भी माया की बेड़ी तोड़कर मुक्त हो सकती है, तो समझना कि हमने अपना काम कर लिया...

यश, कीर्ति एवं दूसरों पर हकूमत करने की कामना किए बिना हम कर्म करें...

जब तक तुम्हें प्रभु एवं गुरु में प्रीति और सत्य में निष्ठा है, तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। पर इनमें से किसी एक का भी खो जाना हानिकारक है...

यदि तुम अपना भला चाहते हो, तो औपचारिकताओं को ठुकरा दो और जीवंत प्रभु - प्रगट प्रभु - मानव रूप में बसे प्रभु की पूजा करो।

आप में से कुछ अग्नि की ज्वाला की तरह फैल कर, भगवान के इस व्यापक रूप की पूजा का उपदेश दें...''

इससे भी अधिक, अबकी बार प्रधानमंत्री माननीय श्री अटलजी ने उनके 79वें जन्मदिन पर अपनी एक कविता ***'आओ फिर से दिया जलाएं'*** की चार पंक्तियाँ जो सुनाई थीं, उसे सुन कर भी प.पू. गुरुजी को प.पू. काकाजी द्वारा करी बातें चित्तपट्टी पर उभर आईं... ऐसा लगा मानो माननीय अटलजी की इन पंक्तियों द्वारा प.पू. काकाजी हमें फिर से रेड एलर्ट कर गए हों। उनकी आँखें नम हो गईं। और... तभी प.पू. गुरुजी ने इसी कविता की अन्य चार पंक्तियाँ भी पढ़ कर सुनाईं–

हम पड़ाव को समझे मंज़िल,
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल,
वर्तमान के मोहजाल में,
आने वाला कल ना भुलाएं,
आओ फिर से दिया जलाएं।

ये पंक्तियाँ एक सच्चे साधक के मन को टटोल कर अंतर्दृष्टि करा ही जाती हैं।

साधक थोड़ी-सी रिद्धि-सिद्धि, वैभव - सामर्थी आने से एवं मानने-पूजने वाले थोड़े बहुत शिष्यों से अपनी पूर्णता समझ कर इसी अलौकिक भूमिका को अंतिम पड़ाव मान कर अटक जाते हैं। इन्हीं भूमिकाओं के आनंद में झूलते रह कर अध्यात्म का अंतिम लक्ष्य तो उसकी आँखों से ओझल ही हो जाता है।

जैसे कोई सत्ता के नशे में मद्होश होकर होशोहवास में नहीं रहता, ठीक उसी प्रकार इस वर्तमान में मिली उपलब्धियों के मोहजाल में फंस कर भविष्य में आने वाले परिणामों यानि– आने वाले कल को भुला कर हम बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं।

यहां माननीय अटलजी ने कहा–

आहुति बाकी, यज्ञ अधूरा,
अपनों के विघ्नों ने घेरा,
अंतिम जय का वज्र बनाने,
नव दधीचि हड्डियाँ गलाएं,
आओ फिर से दिया जलाएं।

हमारे लिए यह **'आहुति'** क्या ? हम रिद्धि-सिद्धि, सामर्थी की– और प.पू. काकाजी के शब्दों में वैभवशाली सत्संग की भूमिका पर ना अटके रह कर हमारे दंभ की आहुति देंगे, तभी हमारी पूर्णाहुति होगी। **हमारी आपसी एकता यदि आंतरिक और सच्ची नहीं होगी, तो विजय असंभव ही है।**

प.पू. गुरुजी ने थोड़े दिन पहले एक बहुत अच्छा प्रसंग बताया था कि मराठों और मुस्लिमों के बीच में युद्ध हुआ...

मुस्लिम हार रहे थे, मराठे जीत रहे थे। रात को मुस्लिमों का सरदार अपने सैनिकों को देखने अपनी हद में चक्कर लगाने निकला। दूर से उसने दुश्मन के खेमे में जगह-जगह थोड़ी-थोड़ी आग जलती देखी। उसने अपने किसी सैनिक से पूछा कि वहां इस प्रकार क्या हो रहा है ? तो सैनिक ने बताया कि मराठा सैनिक अपना अलग-अलग खाना बना रहे हैं। मुस्लिम सरदार ने यह सुन कर सोचा कि जो एक जगह इकट्ठे खाना नहीं बना सकते, जिनका चुल्हा अलग-अलग है, वे चाहे कितने ही ताकतवर क्यों ना हो, पर उनमें से एक-एक को कुछ लालच देकर आसानी से तोड़ कर आपसी फूट डलवा कर जीता जा सकता है। इतिहास गवाह है कि मुस्लिम राजाओं ने इस कूटनीति से मराठों पर विजय प्राप्त की।

दूसरी ओर माननीय अटलजी की ये पंक्तियाँ उनके दिल के दर्द को भी उजागर करती हैं कि–

अपनों के विघ्नों ने घेरा !

तो, **'प.पू. काकाजी के जो हम गिने जाते हैं'**–वे तो इस ध्येय को हाँसिल करने अपने-अपने बौद्धिक मूल्यांकनों-सत्यों की आहुति देकर, प्रगट के मिले और संबंध वालों को पहचान कर उनके प्रति **दिव्यभाव व निर्दोषभाव** के दीप जलाएं और इसी प्रकाश में यू टर्न लेकर **'हम सब एक'** की खरी भावात्मक एकता से वर्तते हो जाएं और उनकी योजना साकार करें।

प.पू. काकाजी अपनी बातों में अक्सर कहते कि और कोई चारा ना हो, तब ताश के खेल में **'जोकर'** यानि– हुक्म का पत्ता डाला जाता है। **गुरुहरि योगीजी महाराज ने हमें - पूरे गुणातीत समाज को– '५२' में प.पू. काकाजी के रूप में '५२'वां पत्ता-हुक्म का पत्ता दिया है...** तो,

आओ फिर से दिया जलाएं

और प.पू. काकाजी की मूर्ति में लय लीन होकर 'स्वामिनारायण' मंत्र के जाप के साथ स्वरूप प्रेरित सहज जीवन जीने का आरंभ करें... **इसे ही प.पू. काकाजी के कहे जाने की सार्थकता कही जाएगी।**

ꙮꙮꙮ

प.पू. काकाजी के साक्षात्कार की जयंती के साथ-साथ और भी मंगल अवसरों की श्रृंखला जुड़ी हुई है जैसे–
26 जनवरी– 1986 में इसी ऐतिहासिक दिन हमारे प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी ने हमें आखिरी संदेश - मॅग्नाकार्टा दिया था। संयोगवश इस बार **वसंतपंचमी** यानि हमारे **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का प्रागट्य दिन** एवं **शिक्षापत्री जयंती** भी इसी महामंगलकारी दिन को है... और सोने में सुहागा रूप यदि कहें तो मुंबई के **नवनिर्मित आंतरराष्ट्रीय पवई मंदिर के शिखर पर कलश भी आज के दिन चढ़ाए जाएंगे।** तो, इस परम पावन दिन पर आपसी स्नेह व एकता की डोरी से बंध कर हम सब प.पू. काकाजी के सिद्धांतों पर चलने की दिशा की ओर कदम बढ़ाएं ऐसी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में अंतर की अभीप्सा।

15 फरवरी– अलगारी संत **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की जन्मजयंती** ! लौकिक दृष्टि से तो गुरुहरि प.पू. पप्पाजी के सुपुत्र, लेकिन आध्यात्मिक पथ पर गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज के दीक्षित पनौते पुत्र। गुरुहरि योगीजी महाराज की प्रसादी की भूमि सांकरदा गाँव में गुरु के प्रति अचल निष्ठारूपी धूनी धखा कर बैठे हैं। 1961 में गढडा की पावन धरती पर साधु की दीक्षा मिली और गुरुहरि योगीजी महाराज ने नाम दिया **'अक्षरविहारीदासजी'** ! कान में मंत्र देते हुए इस नाम का अर्थ समझाया–
'अखंड अक्षररूप बन कर विहार करना। सभी को अक्षररूप मान कर, अक्षररूप बनाने की सेवा भी साथ-साथ करनी।'

गुरु के उसी वचन को लेकर आज अपने वर्तन से अपने नाम को सार्थक कर रहे हैं। ऐसे गरिमायुक्त व समत्व के मूर्तिमान स्वरूप की जयंती पर प्रार्थना करें कि हम भी आपकी तरह केवल गुरु के वचन की ओर दृष्टि रख कर जीएं ऐसा हमें परम निष्ठावान बनाना, जिससे कि हम शाश्वत् सुख के भोक्ता बन सकें।

6 मार्च, होली– अ.म.मु. भगतजी महाराज का प्रागट्य दिन। 'निजात्मानं ब्रह्मरूपम्' की उपासना के सिद्धांत को अ.म.मु. भगतजी महाराज ने अत्यधिक गहराई से समझा और अपना अस्तित्व-व्यक्तित्व 'गुणातीत' में टोटल विलीन करके, गुणातीत के कल्याणकारी गुण प्राप्त करके वारिसदार बने। जाति के दर्जी और गृहस्थी होते हुए भी दासत्व की भावना से सच्चे साधु का जीवन जीकर सभी के आदर्श रूप बने ! उन्होंने संबंध से जीकर बताया। एक बार तो मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी अत्यंत राजी होकर बोल उठे थे कि 'प्रागजी भक्त ने तो हमारी मन, कर्म, वचन से सेवा की है और देह को तनिक भी गिना नहीं है। इसलिए मैं उस पर राजी हुआ... हाथ छुटी बला हो गई – दिल फिसल गया।' **भगवान व बड़े संत जाति, वर्ण, आश्रम कुछ देखते नहीं। जो मन, कर्म, वचन से इनका सेवन करे, उसे अपने जैसा ही बना देते हैं।** तो, इस मंगलकारी दिन पर प्रार्थना करें कि हम ऐसे दास के दास बन कर रहें जिससे कि गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता के पात्र बन सकें।

7 मार्च... गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन ! हम सभी के लिए अंतर्दृष्टि करके

प्रार्थना करने का दिन... मान-अपमान, हर्ष-शोक, खींचातानी, हठ, मान, ईर्ष्या के भावों से ऊपर उठ कर दिल की सच्चाई से जीने का—संकल्प करने का दिन !

और... अबकी **7 मार्च** के दिन ही **धुलेण्डी** है और **प.पू. साहेब की जन्म जयंती....** श्रीजी महाराज के धरती पर गुणातीत समाज के प्रगटीकरण का संकल्प सिद्ध करने ब्र. स्व. योगीजी महाराज अनादि मुक्तों को साथ लेकर ही पृथ्वी पर पधारे। उन्हीं में मुमुक्षुओं के राहबर-ध्रुवतारक स्वरूप प.पू. साहेब ऐसे एक हैं।

गृहस्थों के सखा, युवकों के सारथी, साथी-मित्रों के सहृदयी, बहनों के धर्मवीर भाई, बालकों के धर्मपिता... ऐसे अनेकों के जीवनप्राण प.पू. साहेब को कोटि-कोटि वंदन !

बापा का वचन— *'जसुभाई ! विद्यानगर में ब्रह्मविद्या की कॉलेज शुरु करो'*—साथीदारों को साथ में लेकर वे लग पड़े। यूं बापा की हर छोटी-बड़ी आज्ञा का प.पू. साहेब ने उन्हें भगवान मान कर, अंतर्यामी—सर्वज्ञ मान कर पालन किया तो बापा ने उन्हें अपने जैसा ही बना दिया।

संबंध में आए चैतन्यों को अनहद् प्रीति एवं प्रार्थना के अमोघ शस्त्र से दिव्यता की राह पर अग्रसर करने का निरंतर उद्यम करते प.पू. साहेब कलियुग में नई युवा पीढ़ी को विषयों के रागों से हटा कर उनके जीवन को प्रभुवासित कर देते हैं। नारायणी सेना के पथप्रदर्शक बन कर लौकिक व आध्यात्मिक नेतृत्व कर रहे प.पू. साहेब द्वारा तैयार किया समाज देख कर उनकी सामर्थी व गुणातीत अवस्था का स्पष्ट ख्याल आता है।

इससे भी अधिक, प.पू. साहेब अत्यंत समर्थ होते हुए भी संबंध वालों के पास शून्य बन कर जीते हैं। तो, प.पू. साहेब के चरणों में प्रार्थना कि हे वत्सल हृदय साहेब ! कृपा करके आपके अनंत कल्याणकारी गुणों से हमें भी इस धुलेण्डी पर रंग देना !

✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

* एट धी फर्स्ट साईट जहां हमारा दिल और दिमाग दोनों एक साथ झुक जाएं, वहां जरुर समझना कि प्रभु की शक्ति इन में टोटली काम कर रही है। इस बात का एहसास भी प्रभु हमें कराते हैं। ये अरुण गुप्तोजी जर्मनी से पहली बार मंदिर आए हैं। वो अपनी एफ. आई. आर. देते हुए बोले कि यहां मेरा दिल और दिमाग दोनों झुक गए हैं कि यहां प.पू. काकाजी प्रगट हैं। स्विट्ज़रलैण्ड से आए खान साहेब ने भी यही बात कही थी। **अनुभव तो हमें भी खूब हुए होते हैं, पर हम भूल जाते हैं। प्रभु इनके द्वारा हमें याद कराते हैं।**
* स्वरुप का ज्ञान अपने व्यवहार में लाकर हम जिएं, वो हमारी गीता पूरी हो गई। प.पू. काकाजी इसे अलग ढंग से कहते कि प्रगट के भक्तों का तो एक-एक का एक-एक भागवत् है; क्योंकि एवरी स्टेप, एवरी स्टेज, एवरी मोमेन्ट आश्चर्यकारक घटना महसूस होती है। हम जब से प.पू. काकाजी के कोन्टेक्ट में आए, तब से अब तक के अनुभव यदि हम लिखते तो एक भागवत् बन जाता। हमारे जीवन में प्रभु ने कोई असाधारण काम किया हो, हमारी रक्षा करी हो, कई प्रसंग हमें छू गए हों... वे **एक डायरी में लिख लेने चाहिएं। दूसरों को दिखाने के लिए नहीं, बल्कि हमारा मन बिगड़ने पर वो प्रसंग हमें ही काम आएंगे।**
* खुद का गुरु खुद बनना, क्योंकि एक ह्यूमन नॅचर है, जीव की दशा है— **फरगेटफुलनेस** ! हम एहसान भूल जाते हैं।
* **हमारे में और संत में क्या फर्क ?** हमारे कितने कठिन से कठिन काम प्रभु ने किए हों, मरते-मरते हमें बचा लिए हों; पर प्रभु यदि हमारे मन के मुताबिक हमारा नहीं रखेंगे, तो उनका किया सब भूल कर हम प्रभु के लिए अंटशंट बोलने लगते हैं कि उन्होंने हमारा क्या किया ? जबकि साधु का हमने कितना भी बिगाड़ा हो, पर हमने कोई एक भी चीज़ उनकी मर्जी के मुताबिक करी हो, वे उसे ही बहुत मान कर याद रख के हमारे साथ संबंध रखे रखतें हैं। यह हम में व संत में फर्क है।
* **बड़ों का सच्चा बड़प्पन वही है कि अपने से छोटे कैसे ही बिहेव करें, तो वे गिने नहीं। हमें तो प.पू. काकाजी की प्रसन्नता से लेन-देन है।**
* हमें कई बार लगता है कि बड़े संत तो बस फलां व्यक्ति को ही तारीफ करके उसे श्रेय देते हैं, जिससे कि वो भी अपने आपको—अपने संबंध को सूपीरियर समझता है। पर, प्रभु की लीला अलग होती है, हमें वो समझ में नहीं आएगी।

ये सब बातें समझाने के पीछे मेरी यही एक भावना है कि प.पू. काकाजी की साक्षात्कार स्वर्णजयंती पर हम

भी प.पू. काकाजी का साक्षात्कार कर लें। **हमारी एकता व सुहृद्भाव को देख कर हर एक को लगे कि ये काकाजी के हैं।**

- सारे साधनों– मार्गों में हमें कुछ समझ नहीं आएगी। इसलिए प.पू. काकाजी कहते कि 'संत मार्ग' पर चलो। 'स्वामी ! आप कहो वैसा मैं करुं...' संत हमें गाईड करेंगे। असल में सबसे ज्यादा शॉर्ट कट प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी जो कहें वो करा करें– वो है।
- संत का कहा मानने की बजाय हम उल्टा करते हैं कि स्वामी ! हम जो कहें वो आप करो।
- प.पू. काकाजी कहते कि भगवान तो जानते हैं कि हम पहले अपनी वाईफ के, अपने बच्चों के, अपने व्यवहार के हैं–मतलबी हैं, पर तब भी वे हमारे साथ हमारे लेवल पर हमारे जैसे बन कर रहते हैं !
- कम से कम इतना कबूल तो करें कि काकाजी ! मेरी फर्स्ट प्रायोरिटी तो मेरा ईज़म, मेरा मन, मेरी वाईफ, मेरे बच्चे, मेरा बिज़नेस, मेरा परिवार, मेरा लोक है। हम सोचें कि प्रभु व संत के साथ भी हम कैसा झूठ-बनावट करते हैं ?
- हमारा भयंकर प्रारब्ध टालने के लिए संत हमें कोई आज्ञा करते हैं। हम उनकी आज्ञा के मुताबिक वर्तते नहीं और फिर भगवान को - साधु को दोष देते हैं कि हमारा तो आपने कुछ किया ही नहीं !
- विरोध प्रकृति वाले के साथ मिल कर काम करें।
- जैसे लोहे को मेग्नेट बनने के लिए मेग्नेट के साथ जुड़ना पड़ता है, वैसे ही यदि प्रकृति को दिव्य बनाना हो तो प.पू. काकाजी,प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी जैसी दिव्य विभूति के साथ जुड़ जाएं। यह एकदम सिम्पल प्रोसेस है, पर **हम अपना मन रूपी बटर पेपर बीच में रख कर साधु के साथ जुड़ते हैं, सो ही साधु की दिव्यता हम प्राप्त नहीं कर पाते।**
- एक बार गुरुहरि योगीजी महाराज को पूछा था कि 'साधु' टॉप कक्षा का है, वह कैसे पहचाना जाए ? तब बापा ने जवाब देते हुए कहा कि बिना कुछ बात किए, बिना प्रवचन किए, बिना उपदेश किए बस अपने पीछे लट्टू कर ले– वह **सर्वोच्च साधु** ! चेतना को खींचने की शक्ति उसमें होती है। कृष्ण का अर्थ ही है कि **आकर्षति इति कृष्णः** !
- मन के साथ जब तक जुड़े रहेंगे तब तक डिस्टर्बन्स रहेगी, पर जैसे ही पक्का डिसाईड कर लेंगे कि कुछ गिनना नहीं है, बस एक ही बात कि हम गलत, काकाजी सही... तो हमेशा के लिए सुखी हो जाएंगे।
- स्पिरीच्युआलिटी में प्योरीफिकेशन प्रोसेस ऐसा है कि जहां हमारा कोई लॉजिक नहीं चलता।
- बंदर-हनुमानजी ने भगवान राम के साथ संबंध कर लिया तो आज मानव को भी बंदर की पूजा करनी पड़ती है, क्योंकि हनुमानजी ने मानवस्वरूप में प्रगटी विभूति को पहचान लिया।
- लाखों-करोड़ों की दौलत हो तब भी शांति नहीं मिलती, पर सच्चे संत के पास जाते ही हमें वो अपने आप मिल जाती है।
- बाहरी पूजा– तप, दान, तीर्थ, यात्राएं, व्रत वगैरह हमें सात्त्विकता से सिर्फ जोड़े रखेंगे, संस्कार पड़ते रहेंगे। हम अपने मन में मानते रहेंगे कि हमने खूब धर्म करा; लेकिन जो ट्रान्सफोर्मेशन होना– काल, कर्म, माया से परे होना–वह बात नहीं बनेगी।
- आंतरपूजा यानि भगवान को सदा साकार मानना। मैं निराकार तू सदा साकार, हर क्षण तू सही मैं गलत। ऐसी **आंतरपूजा** करने **से रिज़ल्ट यह आएगा कि हमारे मन की घुटन-ब्लॉकेज क्लीयर हो जाएगी।**
- क्या सच में हमें अपना स्वभाव-क्रोध वगैरह दिल की सच्चाई से निकालना है ? असल में हमें अपने स्वभाव टालने नहीं हैं । जैसे कई बार फोर्मली 'हलो-हाय' करते हैं, ठीक इसी तरह हम ऊपर-ऊपर से प्रभु को पुकारते हैं, सो ही हमारे स्वभाव टलते नहीं हैं। **भगवान हमारी ऊपर-ऊपर की आवाज़ सुनते ही नहीं, भीतर से दिल की सच्चाई से करी प्रार्थना ही सुनते हैं।**
- जिसके साथ दुश्मनी करनी है, उसके साथ हम यारी रखते हैं और जिसके साथ असल में यारी-दोस्ती करनी है, उसके साथ सड़े रहते हैं-मनमुटाव रखते हैं। यानि मन के साथ दुश्मनी करनी है, तो उसके साथ हमारी दोस्ती है, तो दूसरी ओर– मुक्तों के साथ यारी रखनी है, वहां हम **३६** का रिश्ता रखते हैं।
- दुर्योधन अपनी माँ गांधारी के सामने जितना खुल्ला आया, उतना उसका शरीर वज्र का हो गया और जितना ढक करके आया, उतनी कम्मर कच्ची रह गई। वो आख़िर मुत्यु का कारण बनी। ठीक इसी प्रकार हम संत

के साथ मन के जितने पोर्शन खुल्ले रखते हैं, वो दिव्य हो जाते हैं और जितना छुपा कर रखते हैं, वो भाग कच्चा रह जाता है। वो फिर हमें दुःख रूप बनता है।

* हमें पहले अपने भीतर भरे दोषों—क्रोध, लोभ, हठ, मान, ईर्ष्या, वासना, ईज़म के बारे यह समझ लेना पड़ेगा कि ये हमारे दुश्मन हैं—चोर हैं। जैसे ही हम उन्हें दुश्मन समझ कर उस बारे सतर्क-सावधान हो जाएंगे, वे टिक ही नहीं पाएंगे। घर में चोर घुसा हो और उसे ख्याल पड़ जाए कि मालिक जग गया है, तो फिर वह भागने की ही कोशिश करेगा। ठीक ऐसी बात 'स्वभाव' के बारे की है।
* संत के साथ प्रीति से, विश्वास से, समझदारी से—किसी एक अंग से जुड़ जाना पड़ता है। ज्यादा समझदारी भले हम में ना हो, पर इतना तो रख सकते हैं कि संत जो कहें वो करते रहना है। फिर तीव्र भजन करने लग पड़ना। हमारी सिन्सियारीटी देख कर प्रभु हमें हर पल गाईड करते जाएंगे।
* संत ऐसा क्यों कर रहे हैं ? यह विचार हमारे लिए कैंसर से भी अधिक भयंकर है।
* भगवान का मंत्र, संत की स्मृति और अपनी भावना तीनों मिल कर अपना काम करेगी ही।

✡ ✡ ✡

भजन

(राग - ऐ मालिक तेरे बंदे हम...)

काकाजी के हैं सेवक हम, तेरा नाम हम करें रोशन
सुहृद्भाव रखें, निर्दोषबुद्धि रखें, तुमको जो सदा है पसंद
काकाजी के हैं....

रोम-रोम में शास्त्री महाराज, श्वासोश्वास हैं योगी महाराज,
गुरुभक्ति अनूठी जो तुमने करी, देगी युगों-युगों तक प्रकाश,
झेला योगी का तुमने वचन, और देखे असली नारायण,
सुहृद्भाव रखें, निर्दोषबुद्धि रखें, तुमको जो सदा है पसंद
काकाजी के हैं....

करके स्व का विसर्जन बने, अखंड बापा के धारक तुम,
करके स्व का विसर्जन बने, श्रीजी के रहने का धाम तुम,
अद्भुत सामर्थ्य के स्वामी होकर के भी, बने भक्तों के गुलाम तुम,
ऐसे गुणातीत कबीले के हम, ये ही याद रखें हरदम,
सुहृद्भाव रखें, निर्दोषबुद्धि रखें, तुमको जो सदा है पसंद
काकाजी के हैं....

नई सदी में ये संकल्प करें, बस तेरे ही होकर रहें,
मनभेद छोड़ें, मतभेदों में झुकें, अब मिलजुल के जीवन जीएं,
मान कर सत्य तेरे वचन, करें नए युग का अब तो आरंभ,
सुहृद्भाव रखें, निर्दोषबुद्धि रखें, तुमको जो सदा है पसंद
काकाजी के हैं सेवक हम, तेरा नाम हम करें रोशन
सुहृद्भाव रखें, निर्दोषबुद्धि रखें, तुमको जो सदा है पसंद
काकाजी के हैं सेवक हम....

निमंत्रण

प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार को ५२ वर्ष पूरे हो रहे हैं....
तो, आइए —
'ताड़देव' में 7 फरवरी 2004, शनिवार सायं 6:00 से 9:00
प.पू. गुरुजी व प.पू. दिनकरभाई की निश्रा में
भजन संध्या के साथ प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन
स्थानिक रूप से मनाएं.....

— श्री अक्षरपुरुषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर , दिल्ली

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 18.1.2004, रविवार — एकादशी, व्रत-गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि
(2) दि. 26.1.2004, सोमवार — वसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती,
ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री प.पू. शास्त्रीजी महाराज की जयंती
(3) दि. 2.2.2004, सोमवार — एकादशी, व्रत
(4) दि. 3.2.2004, मंगलवार — अशोकविहार 'ताड़देव' स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव।
ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन
(7 फरवरी 2004, शनिवार की सायं स्थानिक रूप से मनाएंगे।)
(5) दि. 15.2.2004, रविवार — प्र.ब्र.स्व. प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की जन्मजयंती
(6) दि. 16.2.2004, सोमवार — एकादशी, व्रत
(7) दि. 18.2.2004, बुधवार — महाशिवरात्रि, व्रत
(8) दि. 21.2.2004, शनिवार — प.पू. गुरुजी की जयंती तिथि
(9) दि. 6.3.2004, शनिवार — होली, ब्र. स्व. भगतजी महाराज का प्रागट्य दिन
(10) दि. 7.3.2004, रविवार — प.पू. काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन,
धुलेण्डी, प्र.ब्र.स्व.प.पू. साहेब की जन्मजयंती
(11) दि. 13.3.2004, शनिवार — प.पू. गुरुजी की जयंती
(28 मार्च, रविवार को ताड़देव-दिल्ली में मनाई जाएगी।)

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'*Taad-dev*', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India)
Tel.: 2722 9327, 2724 9327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road,
Daya Basti, Delhi